धातु

द्वारा
डॉ मुकेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
सरकारी कॉलेज लड़कियां,लुधियाना

परिभाषा एवं स्वरूप

- धातु क्रिया को कहते हैं। कर्ता द्वारा जब कोई कार्य किया जाता है उसे क्रिया कहते हैं जैसे–पढ़ता है, जाता है, खाता है, खेलता है आदि।

- धातु का संबंध लकार से होता है। लकार दस प्रकार के होते हैं किन्तु इनमें पाँच लकारों का प्रयोग व्यावहारिक रूप से अधिक होता है।

- इन पाँच लकारों के नाम क्रमशः लट्,लृट्,लोट्,लङ् और विधिलिङ् हैं। ल से शुरु होने के कारण ही इन्हें लकार का नाम दिया गया है।

- लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल,लृट् का भविष्यकाल,लोट् का आदेश, लङ् का भूतकाल और विधिलिङ् लकार का प्रयोग विधि,प्रश्न और आमन्त्रणादि के लिए किया जाता है।

- प्रत्येक लकार में धातु के साथ अलग–अलग प्रत्यय लगते है जिससे लकार के अनुसार धातु के रूप में परिवर्तन होता रहता है।

- भूत,भविष्यादि तीन काल और विविध परिस्थितियों को व्यक्त करने के लिए इन लकारों को बनाया गया है।

पुरुष

- क्रिया में प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष तीन पुरुष होते हैं। इनका संबंध धातु के अर्थ से होता है।

- प्रथमपुरुष– जिसके बारे में बात की जाए अथवा चर्चा की जाए वह प्रथमपुरुष होता है। उसके लिए हम व्यक्ति का नाम अथवा वह शब्द का प्रयोग करते हैं जैसे–राम पढ़ता है, वह खेलता है आदि।

- मध्यमपुरुष– कर्ता के कथनों को सुनने वाला मध्यमपुरुष कहलाता है।जिसको श्रोता भी कहते हैं। वाक्य में तुम शब्द की अभिव्यक्ति हेतु इसका प्रयोग होता है जैसे– तुम पढ़ो, तुम जाओ आदि।
- उत्तमपुरुष– उत्तमपुरुष स्वयं वक्ता होता है और अपने लिए वह मैं अथवा हम शब्दों का प्रयोग करता है जैसे– मैं जा रहा हूँ, हम खेलते हैं आदि।

निम्नलिखित तालिका में प्रथमादि पुरुषों का प्रयोग स्पष्ट है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सः	तौ	ते
मध्यमपुरुष	त्वम्	युवाम्	यूयम्
उत्तमपुरुष	अहम्	आवाम्	वयम्

ध्यान देने योग्य तथ्य

- यह बात ध्यान देने योग्य है कि पठ् धातु में अन्तिम वर्ण आधा है किन्तु जब लटादि लकारों में इनके अलग– अलग रूप बनते हैं तो वहां प्रत्यय लगने के कारण यह पूरा हो जाएगा।
- भाषा की व्याकरण के अनुसार यहां क्रमशः एकवचन, द्विवचन और बहुवचन होते हैं जो इसे अन्य भाषाओं से अलग करते हैं।

पठ् धातु लट् लकार

अर्थ– पढ़ना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमपुरुष	पठामि	पठावः	पठामः